सं. ग्री.वि./एफ.डी./227-85/40208.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै.फेरोक इण्डस्ट्रीज, 14 माईल स्टोन, मथुरा रोड, फ़रीदाबाद, के श्रमिक श्री राम मिलन तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके ≰वाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतुं निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फ़रवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फ़रीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है ,या विवाद से असुसंगत ध्रथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री राम मिलन की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो हुँवह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./एफ.डी./228-85/40215.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. फैरोक इण्डस्ट्रीज, 14 माईल स्टोन, मथुरा रोड, फरीदाबाद, कि श्रमिक श्री जामबन्त तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 ज्न, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, दारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :---।

क्या श्री जामवन्त की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

स. श्रो.वि./एफ.डी./218-85/40 222.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. फैरोक इन्डोस्ट्रीज, 14 माईल स्टोन, मथुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री रिव शंकर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुये ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री रिव शंकर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./एफ.डी./222-85/40229. →च्ंकि हिर्याणा के राज्यपाल की राये है कि मै० फैरोक इण्डस्ट्रीज, 14 माईल स्टोंन, मथुरा रोड, बुफरीवाबाद के श्रमिक श्री दधी बाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोडोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरिक्षाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनिण्य हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, किनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उससे प्राथमुचना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित शीचे लिखा, पामला न्यायितिर्णय एवं पंचाट तोन मास में देते हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुनंगत अग्रा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री दधी बाल की सेवाओं का समापन न्यायौचित बया ठोक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?